JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.JLPER.com

Published by iSaRa Solutions

स्वामी दयानन्द सरस्वती और भारतीय राष्ट्रवाद

डॉ0 पूनम गैरोला
राजनीति विज्ञान विभाग
पी0जी0 कॉलेज ऋषिकेष

स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य समाज के संस्थापक, भारतीय संस्कृति के वैदिक संरक्षक और सत्य के अन्वेषक थे। उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत को आलोकित किया और देषवासियों को अपनी दूरदर्षिता से ऊपर उठाकर भविष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी।

उन्होंने सर्वप्रथम ''वेदों की ओर लौटो'' का सन्देष दिया, वे एक संत समाज सुधारक और देषभक्त थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती, तिलक गांधी के समाज राजनीतिक दार्षनिक नहीं थे और न ही प्रत्यक्ष रूप में भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के साथ जुड़े हुये थे, फिर भी उन्होंने भारतीयों के हृदय में स्वधर्म और स्वदेष के प्रति स्वाभिमान उत्पन्न करने और देष में नवजागरण का मंत्र फूंकने का महान कार्य किया। वे वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद के अनन्य पुजारी थे तथा उन्होंने स्वाधीनता की नैतिक तथा बौद्धिक नींव तैयार की। वे राजनीतिज्ञ न होकर एक धार्मिक तथा सामाजिक चिन्तक थे। उन्होंने राष्ट्र और समाज को वेदों के आधार पर स्थापित करने का प्रयत्न किया। उनका मानना था कि यदि हम भारतीय वेदों के अनुसार अपना आचरण करें तो उनमें भावना का विकास होगा[1]।

दयानन्द सरस्वती जी के समस्त चिन्तन का मूल आधार वेद ही थे। उनका मानना था वेद में केवल धर्म की ही बातें नहीं हैं वरन बल्कि विज्ञान की भी सारी बातें हैं।दयानन्द सरस्वती ने ऐसे समय में भारतीय राष्ट्रवाद में प्राण फूंके और देषवासियों को नवजागरण का संदेष दिया जब भारत पर ब्रिटिष साम्राज्य का षिंकजा कसता जा रहा था। ऐसे विकट और अवसाद ग्रस्त समय में महर्षि दयानन्द हिन्दू पुनरूत्थानवाद के उग्र प्रवक्ता बने। दयानन्द ने देष वासियों के संमुख भारत की महिमा को उजागर किया[2]। स्वामी दयानन्द ने भारतीयों के हृदय में यह भाव भरने का अथक प्रयास किया कि वेद ही उनकी वाणी है और भारत ही ईष्वर का प्रिय देष है[3]। स्वामी दयानन्द प्रथम हिन्दू समाज सुधारक थे। उन्होंने संदेष दिया कि वैदिक धर्म सत्य का समर्थक है। हिन्दू पुनरूत्थानवाद के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद को जगाने के लिए स्वामी दयानन्द ने अविवेक अंधविष्वासों और रूढ़िवादिता का विरोध किया और सत्य का अवलोकन किया। उन्होंने जिस आर्य समाज की स्थापना की उसमें भी उन्होंने जाति पाति और रूढ़िवादिता को कोई स्थान नहीं दिया[4], स्वामी दयानन्द ने नये भारत के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे सम्पूर्ण भारत के लोग सरल और विवेकपूर्ण जीवन जी

सकें। उन्होंने सम्पूर्ण समाज में व्याप्त कुरीतियों का अंत कर लोगों में स्वाभिमान की भावना को जाग्रत किया, उनको गौरवषाली अतीत के प्रति उत्साहित किया और इन सभी बातों से भारतीय राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाया। स्वामी दयानन्द ने अपने ओजस्वी विचारों से देष को मानसिक जड़ता से मुक्ति दिलाने का अथक प्रयत्न किया। भारतीय राष्ट्रीयवाद के उत्थान की दिषा में यह एक बहुत ही प्रेरणादायक कदम था, उन्होंने समस्त भारतीयों को सन्देष दिया कि वे अपने राष्ट्रीय और सामाजिक चरित्र को अनुकरणीय बनायें।

उन्होंने ''सत्यार्थ प्रकाष'' में स्वराज्य का आदर्ष रूप प्रस्तुत किया जिसने देषवासियों को प्रेरणा दी। उन्होंने सम्पूर्ण देषवासियों को ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि स्वदेषी राज्य सर्वोपरि व सर्वोत्तम होता है[5]। वे देष की स्वतन्त्रता के लिए इतने व्याकुल थे कि अपनी पुस्तक ''आर्याभिविनय'' की प्रार्थनाओं में उन्होंने ईष्वर से यह कामना की है कि हम कभी पराधीन न हों। स्वामी दयानन्द के लिए सम्पूर्ण भारत उनका घर था वे प्रत्येक देषवासी के मन में भारत की सेवा करने की जिज्ञासा और आंकाक्षा भर देना चाहते थे। उनका कहना था कि हम इस देष की मिट्टी में पलकर बड़े हुये हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम तन मन धन से अपने देष की सेवा ठीक उसी प्रकार से करें जिस प्रकार से हमारा देष मौन भाव से हमारी सेवा कर रहा है। भारत को एक सषक्त राष्ट्र देखने की इच्छा से देष को निकट भविष्य में स्वतन्त्रता प्राप्ति की राह पर दृड़तापूर्वक गति देने के उद्देष्य से उन्होंने कठोर जाति प्रथा पर प्रहार किया और अस्पृष्यता का विरोध किया। उन्होंने संदेष दिया कि यदि हमें व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से प्रगति करनी है तो हमारे जीवन के नियमों और आदर्षों में परिवर्तन होना चाहिए। अस्पृष्यता के लिए उनका युद्ध भारत के लिए, भारत की एकता के लिए एक महान देन है। भारतीय राष्ट्रवाद के जागरण में स्वामी दयानन्द की एक महत्वपूर्ण देन यह थी कि उन्होनें उसी युग में भारत की एक सम्पर्क भाषा की कल्पना राष्ट्रभाषा के रुप में की क्योंकि उनका मानना था कि देष को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए हिन्दी भाषा का पूरे देष में प्रचलन आवष्यक है[6]। इसलिए स्वामी दयानन्द ने हिंदी को राष्ट्रीय एकता का माध्यम माना। उनका मानना था कि जिस देष में एक भाषा एक धर्म और एक वेषभूषा को महत्व नहीं मिलेगा उसकी एकता व अखंडता कमजोर रहेगी और उस राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं होगा। भारतीय राष्ट्रवाद को सबल बनाने के लिए दयानन्द जी ने अनेक महत्वपूर्ण प्रयास व कार्य किये[7]।

राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन देने के लिए उन्होंने स्वदेषी वस्तुओं का प्रयोग करना प्रत्येक व्यक्ति का धार्मिक कर्तव्य बताया स्वदेषी वस्तुओं के र्निमाण और प्रयोग को प्रोत्साहन देने में स्वामी दयानन्द वस्तूतः महात्मा गाँधी के अग्रदूत थे। उनके इस कदम ने भारतीय जीवन के राजनीतिक पक्ष को बहुत अधिक प्रभावित किया। उन्होंने सम्पूर्ण भारतीयों को निर्भीकता का पाठ पढाकर भारतीयों को विदेषी प्रभुत्व से टक्कर लेने की षक्ति दी। उन्होंनं स्पष्ट रुप से इस बात पर बल दिया कि केवल निर्भीकता ही अपने राजनीतिक स्परुप में एक ऐसी षक्ति हैं

जो निरंकुष साम्राज्यवाद के विरुद्ध खडा हो सकती हैं। उन्होंनें कहा कि मानव अधिकारों की प्राप्ति केवल निर्भीकता और साहस से ही सम्भव है। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना आत्मबल बढाना होगा तभी एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण सम्भव है[8]।

निष्कर्ष

महर्षि दयानन्द के विचारो और कियाकलापो से स्पष्ट है कि वे उस राष्ट्रवादी परम्परा के जनक थे जो एक आदर्ष राष्ट्र के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है! उन्होने श्राष्ट्रवाद के लिए जो आन्दोलन षुरु किया उसमें आत्म निर्भरता उत्पन्न हुई और भारतीयो में आत्म सम्मान की भावना को जोर पहुँचा ! उन्होने भारतीय समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया और भारतीय राष्ट्रवाद को पुनः जीवित किया ,ताकि सम्पूर्ण देष का उत्थान हो सके और एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण हो सकें ।

सन्दर्भ

1— राम गोपाल : भारतीय संस्कृति पृ0— 57

2— स्वामी दयानन्द : सत्यार्थ प्रकाष पृ0— 172

3— डॉ0 ए0पी0 अवस्थी — भारतीय राजनीतिक विचारक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृ0सं0— 120

4— वही उपरोक्त, पृ0सं0 —120

5— स्वामी दयानन्द — सत्यार्थ प्रकाष, पृ0सं0— 141

6— प्रकाषवीर शास्त्री— हिन्दुस्तान 5 नवम्बर, 1972 में प्रकाषित लेख

7— षिव चन्द्र, हिन्दुस्तान 29 अक्टूबर, 1970 में प्रकाषित लेख

8— विष्वनाथ प्रसाद वर्मा— पृ0सं0 — 41

JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH